सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी ब

टेस्ट पेपर-03

पाठ-05 पर्वत प्रदेश में पावस –सुमित्रानंदन पंत

निर्देश -

1. **सभी प्रश्न अनिवार्य है।**
2. **प्रश्न 1 से 3 एक अंक के है।**
3. **प्रश्न 4 से 8 दो अंक के है।**
4. **प्रश्न 9 से 10 पांच अंक के है।**

---

1. प्रस्तुत कविता में गिरि का गौरव-गान कौन कर रहे है?
2. प्रस्तुत कविता में किसे पावस ऋतु कहा गया है?
3. बादलों पर पर्वत के छिप जाने की कवि ने कैसी कल्पना की है?
4. 'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?
5. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?
6. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
   उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
   हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
   अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।
7. गिरि का गौरव गाकर झर झर
   मद में नस-नस उत्तेजित कर
   मोती की लड़ियों से सुंदर
   झरते हैं झाग भरे निर्झर। प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए|
8. 'पर्वत प्रदेश में पावस 'कविता की किन्हीं दो भाषागत् विशेषताओं का उल्लेख कीजिए|
9. प्रस्तुत कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है| कविता में प्रयुक्त मानवीकरण अलंकार के प्रयोग को स्पष्ट कीजिए|
10. वर्षा ऋतु में इंद्र की जादूगरी के दो उदहारण दीजिए|

सीबीएसई कक्षा-10 हिंदी ब

टेस्ट पेपर-03

पाठ-05 पर्वत प्रदेश में पावस –सुमित्रानंदन पंत

आदर्श उत्तर

1. इस कविता में गिरि का गौरव-गान निर्झर कर रहे हैं|
2. वर्षा ऋतु को पावस ऋतु कहा गया है|
3. कवि ने यह कल्पना की है कि बाद अचानक ऐसे उठे,मानो पूरा पहाड़ एक विशाल पक्षी के समान बादलों के पंख फड़फड़ाकर आकाश में उड़ चला हो|
4. पहाड़ पर उग आए पेड़ों पर असंख्य रंग-बिरंगे फूल दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि पहाड़ की असंख्य आँखें हैं। इसलिए कवि ने यहाँ पर इस पद का प्रयोग किया है।कवि ने यहाँ पर्वत का मानवीकरण किया है |
5. घने कोहरे में शाल के वृक्ष दिखाई देना बंद हो गए हैं। ऐसा लगता है कि वे उस घने कोहरे से डरकर धरती में समा गए हैं।जो वृक्ष ह्रदय से उठती आकांक्षाओं के समान ऊपर नीरव नभ में झाँक रहे थे वे अचानक बादलों के आ जाने से डर के कारण धरती में धँस गए प्रतीत होते हैं|
6. पहाड़ के ऊपर और आस पास पेड़ भी होते हैं जो उस दृष्टिपटल की सुंदरता को बढ़ाते हैं। पर्वत के ह्रदय से पेड़ उठकर खड़े हुए हैं और शांत आकाश को अपलक और अचल होकर किसी गहरी चिंता में मग्न होकर बड़ी महात्वाकांक्षा से देख रहे हैं। ये हमें ऊँचा, और ऊँचा उठने की प्रेरणा दे रहे हैं।
7. इन पंक्तियों में कवि ने झरनों की सुंदरता का बखान किया है। झरने मोती की लड़ियों की तरह झर रहे हैं। उनकी कल-कल ध्वनि से ऐसा लगता है जैसे वे पहाड़ के प्रताप के गाने गा रहे हैं और पहाड़ के गौरव के नशे में चूर हैं। झरनों के झरने में एक तरह का नशा है।
8. प्रस्तुत कविता में कवि ने शब्दों की चित्रमई भाषा से कविता को सौंदर्य प्रदान किया है;जैसे –'मेखलाकार पर्वत अपार'|इस कविता में कवि ने संगीतात्मक भाषा का प्रयोग किया है |कविता में लय, तुक आदि का भी ध्यान रखा गया है |
9. पंत ने प्रकृति का मानवीकरण अत्यंत सुंदर तरीके से किया है |उनके लिए प्रकृति के हर अंग में मानवीय चेतना भरी हुई है | उन्हें झरनों द्वारा पर्वत का यशोगान करना बहुत अच्छा लगता है|विशाल पर्वत अपने विशाल आकार को सुमन रूपी नेत्रों से दर्पण के समान फैले विशाल तालाब में निहार रहा है|पेड़ उच्च- आकांक्षाओं से प्रेरित होकर आकाश को छू लेने वाले प्रतीत होते हैं|बादलों का अचानक छा जाना पृथ्वी पर आक्रमण करने जैसा प्रतीत होता है| यहाँ उन्होंने कल्पना की है कि स्वयं इन्द्रदेव बादलों के यान पर सवार होकर अपना जादू दिखा रहे हैं|
10. कवि के अनुसार वर्षा ऋतु में इन्द्रदेव अपने बादल रूपी यान में सवार होकर अपनी जादूगरी दिखा रहे हैं | विशाल बादलों के कारण पर्वतों का दिखाई देना बंद हो गया है |झरने भी ओझल हो गए हैं ,उनकी आवाज़ ही शेष रह गई है| इस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो पर्वत बादलों के पंख लगाकर उड़ गया हो| घनघोर वर्षा के कारण शाल के वृक्ष भयभीत दिखाई दे रहे हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो वे भय से ज़मीन में धँस गए हैं|तालाब के जल से कोहरा धुएँ के समान प्रतीत हो रहा है,जैसे तालाब में आग लग गई हो |